Printing Area®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled अध्यापक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा of Dr./Mr./Miss/Mrs. डॉ. राजेश कुमार सिंह

It is peer reviewed and published in the Issue 116 Vol. 103 in the month of August 2024.

Thank you for sending your valuable writing for printing area Journal

Indexed (IIJIF)

Impact Factor 9.23

Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.3418002

ISSN 2394-5303

Editor in chief

Dr.Bapu G.Gholap

ISSN 2394-5303

Printing Area

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Issue-116, Vol-03, August 2024

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd

www.vidyawarta.com

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2024, Issue-116, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) HOW THE WORLD IS RESPONDING: THE DYNAMICS OF GREEN....
Neha Tripathi, Delhi ||10

02) A Study of Entrepreneurship Development Program in Maharashtra
Dr. M. P. Pagare, Jafrabad Dist. Jalna ||20

03) THE IMPACT OF GLOBALIZATION ON THE BUSINESS
Dr. Sou. Parvati B. Patil, Ramanand nagar, Dist. Sangli ||23

04) EXPORT, IMPORT AND ECONOMIC GROWTH IN INDIA
Dr. B. S. Patil, Jaysingpur, Dist. Kolhapur ||28

05) Preamble, The Soul of The Indian Constitution
Dr. Prakash Jangale, Thane ||32

06) Changing Trends in Indian Foreign Policy : an Overview
Dr. Mohan B. Biradar, Jafrabad, Dist. Jalna ||37

07) A Study of Micro Finance and Women Empowerment in India
Dr. Nilesh B. Gawade, Soegaon Dist. Chhatrapati Sambhajinagar ||41

08) To study the awareness among lactating mothers about breast feeding
Roshni Singh, Dr. Mamta Khapediya, Moti Tabela, Indore ||46

09) AN ANALYTICAL STUDY OF PERFORMANCE EVALUATION OF SUGAR.....
Asha Gupta, Dr. Raj Kumar Gupta, Patna, Bihar ||47

10) The Impact of Regional Dialects on Character Development in....
Prof. Ashwini Siddharam Nimbane, Solapur ||50

11) Fields, Forts, and Families: The Making of Rajput Power
Tripti Detha ||60

12) A STUDY ON OPPORTUNITIES PROVIDED BY E- MARKETING TO CONSUMERS
NEETU SINGH RAJPUT, PRATIBHA GAUTAM, Gwalior (M.P.) ||63

13) THE ROLE OF ACCOUNTING IN BUSINESS
DR. SANJAYKUMAR MACHHINDA KAMBLE, BADNAPUR.DIST- JALNA ||66

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) Importa nce of Manvend ra n ath Roy's Thoughts in presen t Scenario
Dr. Shankar Laxmanrao Sawargaonkar, Nandur (ghat), Dist. Beed ||70

15) Anaretella longipalpi, A NEW SPECIES OF THE GENUS.....
M. S. Siddiqui, Naigaon (Bz), Dist. Nanded ||73

16) ग्रामीण भागातील गर्भवती महिलांमधील किरकोळ आजार आणि....
अनुश्री मंगेश तांबट, डॉ. वंदना फटाळे ||75

17) श्रीनिवास विनायक कुलकर्णी यांच्या ललित लेखनातील पशु....
प्रा. डॉ. राजाभाऊ भाऊसाहेब धायगुडे, परळी वै. जि. बीड ||85

18) पु. भा. भावे साहित्य : एक आकलन
सौ. शुभांगी डोरले –परांजपे, नागपूर ||87

19) श्याम मनोहरांच्या कथांतील विविधांगी दर्शन
प्रा. डॉ. विष्णुपंत म. इंगवले, सांगली ||90

20) डॉ. अंबेडकर व महिला सशक्तिकरण
प्रोफेसर (डॉ.) के.पी. यादव, डॉ. श्रद्धा हिरकने, रायपुर, छत्तीसगढ़ ||94

21) हिन्दी साहित्य की विधाओं में किसान विमर्श: एक दृष्टि
डॉ. पूनम नेगी, जोधपुर (राजस्थान) ||97

22) इक्कीसवी सदी के नाटकों का अनुभूति पक्ष
शिमला रानी, मंगाला, जिला–सिरसा (हरियाणा) ||102

23) उत्तराखण्ड में समेकित बाल विकास योजना केन्द्रों के संरचनात्मक.....
संगीता कुमारी, रानीखेत, उत्तराखण्ड ||106

24) छायावादी काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता
डॉ. प्रवीण चंद, जोधपुर (राज.) ||111

25) महिला श्रमिकों की पारिवारिक एवं शैक्षिक प्रस्थिति
डॉ. अखिलेश सिंह, सुलतानपुर (उ.प्र.) ||115

26) गुप्त काल में महिलाओं की स्थिति....
डॉ. प्रमोद कुमार, महिपाल सिंह, श्रीगंगानगर (राजस्थान) ||119

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

27) नारी सशक्तिकरण की अवधारणा एवं यथार्थ
कु. प्रीति, देवरिया ||122

28) अध्यापक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा
डॉ. राजेश कुमार सिंह, सिंगरामऊ, जौनपुर ||126

29) भक्तिकाल में कबीर की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन
कार्तिक प्रसाद यादव, डॉ. जय गोविंद प्रसाद, हजारीबाग ||131

30) गंगरार के किले का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के रूप में अध्ययन
माधवलाल अहीर, गंगरार, जिला चित्तौड़गढ़ (राज.) ||134

31) हिंदी भीम गीतों की विशेषताएँ
शितल प्रल्हाद चव्हाण, कोल्हापुर ||138

32) कथाकार हबीब कैफी : एक परिचय
डॉ. बाबूलाल बैरवा, दौसा (राज.) ||140

33) भारत में कर्त्तव्यों की अवधारणा : एक विस्तृत अध्ययन
डॉ. दिनेश कुमार तेली, बांसवाड़ा (राजस्थान) ||142

34) मानवजीवने आश्रमव्यवस्थायाः महत्त्वम्
डॉ. सुरेशकुमार शर्मा, चौमूं (जयपुरम्) ||147

35) वसुधैव कुटुम्बकम्
डॉ. पारमिता पण्डा, तिरुपति ||152

36) राजर्षी शाहू यांच्या कोल्हापुरातील शैक्षणिक सुधारणा चळवळीचे विश्लेषण
श्री. रविंद्र रामचंद्र केदारी, भांडुप ||155

37) SEXUAL HARASSMENT AND ABUSE IN SPORT IN UTTAR PRADESH....
Dr. Sheel Dhar Dubey, Dr. Anurag Kumar Srivastava, Lucknow, (U.P.) ||161

38) Women's Experiences with Health Care During the COVID-19....
Hanumappa Malappa Waggar, Kembavi, Dist: Yadagir ||168

39) Women Teachers A sociological Analysis
Neelakant Tippanna Kanni, Shahabazar Naka, Kalaburagi ||171

40) ALL-INDIA SERVICES AND STATE SERVICES
Dr. Chitrashekar Chiralli, Chittaguppa ||175

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

28

अध्यापक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा

डॉ. राजेश कुमार सिंह
असि. प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा संकाय
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर

****

राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास में अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकरण पर अनेक समितियां तथा संगोश्ठियों में चर्चा हुई है। पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रमों के संपादन में अध्यापक की भूमिका प्रमुख है, क्योंकि छात्रों का अध्यापक में पूर्ण आस्था एवं विश्वास होता है। आज भी अधिकांश अध्यापकों को उनके अध्यापकों द्वारा तथा समुदाय के द्वारा आदर एवं सम्मान किया जाता है।

पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के संबंध में संचेतना, बोध, अभिवश्त्ति तथा मूल्य का विकास करना है। पर्यावरण अध्ययनों में छात्र अपने प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण को क्रमबद्ध ढंग से खोज करते हैं। पर्यावरण–शिक्षा की पाठ्य–वस्तु को प्राथमिक स्तर से प्रारंभ किया जाता है कोठारी शिक्षा आयोग ने उच्च प्राथमिक स्तर के लिए संस्तुति की ''पर्यावरण क्रियाओं में प्रकृति का अध्ययन, भौतिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र में किया जाए। रचनात्मक तथा सृजनात्मक 'कौशल व व्यावसायिक कार्यों का कला, क्राफ्ट तथा तथा स्वस्थ जीवन के लिए प्रयोगात्मक अभ्यास के लिए पर्यावरण शिक्षा का आधार प्रस्तुत करेगी।" पर्यावरण शिक्षा समस्या केंद्रित अंत: अनुशासन, मूल केंद्रित, समुदाय उन्मुख जो मानवीय जीवन के लिए को सुरक्षित रखने से संबंधित है।

अध्यापक शिक्षा :–

शिक्षण अधिगम के लिए अध्यापक शिक्षा एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में अध्यापकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें शिक्षक के लिए तैयार किया जाता है स अब प्रशिक्षण देने में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुदेशन प्रक्रिया को भी सिखाया जाता है। शिक्षा की प्रणाली अध्यापक शिक्षा संस्थानों की प्रशिक्षण प्रक्रिया पर निर्भर होती है कि यह किस प्रकार के अध्यापकों को तैयार करती है।

सैद्धांतिक दृष्टि ने ए०एस०बार ने अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम के तीन मानदंड लिए– प्रवेश का मानदंड, अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम तथा अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था प्रक्रिया स यह मानदंड अथवा पद्ध अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित है। उद्देश्य बदलते रहते हैं, इसलिए अध्यापक अध्ययन की पाठ्य–वस्तु भी बदल जाती है, क्योंकि पाठ्य–वस्तु उद्देश्यों की प्राप्ति का माध्यम होता है स शिक्षा सामाजिक परिवर्तन तथा नियंत्रण का शक्तिशाली यंत्र है। शिक्षा की प्रक्रिया का संपादन अध्यापक द्वारा किया जाता है तथ राष्ट्रीय और सामाजिक विकास के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की पुनर्रचना की जाती है।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण तथा उसकी शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा के आधार पर पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा को यद्यपि एक स्पष्ट दिशा मिली और इसकी सीमाओं को भी काफी सीमित कर दिया गया लेकिन जैसे–जैसे पर्यावरण के क्षेत्र का विस्तार विचारको की दृष्टि में आ रहा है और वह जीवन पद्धति के हर पहलू को मानव के निकट जोड़ने में लगे हैं वैसे ही पर्यावरण शिक्षा की नई–नई और भिन्न–भिन्न परिभाषाएं मिलने लगी है।

पर्यावरण शिक्षा दायित्वों को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपनी संस्कृति तथा जैव भौतिक परिवेश के मध्य अपनी संबद्धता को पहचान और समझने के लिए आवश्यक कौशल तथा अभिवश्त्ति का विकास कर सके। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण गुणवत्ता से संबंधित प्रकरणों के लिए व्यवहारिक संहिता का निर्माण करने तथा निर्णय लेने की आदतों को भी व्यवस्थित करती है। अत: पर्यावरण शिक्षा वर्तमान परिपेक्ष्य में विश्व समुदाय जो अपने कृत्यों से तथा विकास की प्रतियोगिता में उत्तरोत्तर भागीदारी करने को उतावला होकर पृथ्वी

28

अध्यापक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा

डॉ. राजेश कुमार सिंह
असि. प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा संकाय
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर

****

राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास में अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकरण पर अनेक समितियां तथा संगोशिठयों में चर्चा हुई है। पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रमों के संपादन में अध्यापक की भूमिका प्रमुख है, क्योंकि छात्रों का अध्यापक में पूर्ण आस्था एवं विश्वास होता है। आज भी अधिकांश अध्यापकों को उनके अध्यापकों द्वारा तथा समुदाय के द्वारा आदर एवं सम्मान किया जाता है।

पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के संबंध में संचेतना, बोध, अभिवशत्ति तथा मूल्य का विकास करना है। पर्यावरण अध्ययनों में छात्र अपने प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण को क्रमबद्ध ढंग से खोज करते हैं। पर्यावरण–शिक्षा की पाठ्य–वस्तु को प्राथमिक स्तर से प्रारंभ किया जाता है कोठारी शिक्षा आयोग ने उच्च प्राथमिक स्तर के लिए संस्तुति की ''पर्यावरण क्रियाओं में प्रकृति का अध्ययन, भौतिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र में किया जाए। रचनात्मक तथा सृजनात्मक 'कौशल व व्यावसायिक कार्यों का कला, क्राफ्ट तथा तथा स्वस्थ जीवन के लिए प्रयोगात्मक अभ्यास के लिए पर्यावरण शिक्षा का आधार प्रस्तुत करेगी।'' पर्यावरण शिक्षा समस्या केंद्रित अंत: अनुशासन, मूल केंद्रित, समुदाय उन्मुख जो मानवीय जीवन के लिए को सुरक्षित रखने से संबंधित है।

अध्यापक शिक्षा :–

शिक्षण अधिगम के लिए अध्यापक शिक्षा एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में अध्यापकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें शिक्षक के लिए तैयार किया जाता है स अब प्रशिक्षण देने में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुदेशन प्रक्रिया को भी सिखाया जाता है। शिक्षा की प्रणाली अध्यापक शिक्षा संस्थानों की प्रशिक्षण प्रक्रिया पर निर्भर होती है कि यह किस प्रकार के अध्यापकों को तैयार करती है।

सैद्धांतिक दृष्टि ने ए०एस०बार ने अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम के तीन मानदंड दिए– प्रवेश का मानदंड, अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम तथा अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था प्रक्रिया स यह मानदंड अथवा पक्ष अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित है। उद्देश्य बदलते रहते हैं, इसलिए अध्यापक अध्ययन की पाठ्य–वस्तु भी बदल जाती है, क्योंकि पाठ्य–वस्तु उद्देश्यों की प्राप्ति का माध्यम होता है स शिक्षा सामाजिक परिवर्तन तथा नियंत्रण का शक्तिशाली यंत्र है। शिक्षा की प्रक्रिया का संपादन अध्यापक द्वार किया जाता है तथा राष्ट्रीय और सामाजिक विकास के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की पूनर्रचना की जाती है।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण तथा उसकी शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा के आधार पर पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा को यद्यपि एक स्पष्ट दिशा मिली और इसकी सीमाओं को भी काफी सीमित कर दिया गया लेकिन जैसे–जैसे पर्यावरण के क्षेत्र का विस्तार विचारको की दृष्टि में आ रहा है और वह जीवन पद्धति के हर पहलू को मानव के निकट जोड़ने में लगे हैं वैसे ही पर्यावरण शिक्षा की नई–नई और भिन्न–भिन्न परिभाषाएं मिलने लगी हैं।

पर्यावरण शिक्षा दायित्वों को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपनी संस्कृति तथा जैव भौतिक परिवेश के मध्य अपनी संबद्धता को पहचान और समझने के लिए आवश्यक कौशल तथा अभिवशत्ति का विकास कर सके। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण गुणवत्ता से संबंधित प्रकरणों के लिए व्यवहारिक संहिता का निर्माण करने तथा निर्णय लेने की आदतों को भी व्यवस्थित करती है। अत: पर्यावरण शिक्षा वर्तमान परिपेक्ष्य में विश्व समुदाय जो अपने कृत्यों से तथा विकास की प्रतियोगिता में उत्तरोत्तर भागीदारी करने को उतावला होकर पृथ्वी

के स्वर्गीय एवं स्वस्थ पर्यावरण को नरकीय पर्यावरण में परिवर्तित कर रहा है, इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है ताकि विशम समस्याओं का बोध किया जा सके।

पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः विश्व समुदाय को पर्यावरण संबंधी दी जाने वाली वह शिक्षा है जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उसका समाधान खोज सके और साथ ही साथ भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को रोका जा सके, अन्यथा वर्तमान विकास मानव के लिए सर्वदा बाधक एवं आपदा बनाकर उपस्थित हो जाएगा।

पर्यावरण तथा उसकी शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा के आधार पर पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा को यद्यपि एक स्पष्ट दिशा मिली और इसकी सीमाओं को भी काफी सीमित कर दिया गया लेकिन जैसे–जैसे पर्यावरण के क्षेत्र का विस्तार विचारको की दृष्टि में आ रहा है और वह जीवन पद्धति के हर पहलू को मानव के निकट जोड़ने में लगे हैं वैसे ही पर्यावरण शिक्षा की नई–नई और भिन्न–भिन्न परिभाषाएं मिलने लगी हैं।

पर्यावरण शिक्षा दायित्वों को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपनी संस्कृति तथा जैव भौतिक परिवेश के मध्य अपनी संबद्धता को पहचान और समझने के लिए आवश्यक कौशल तथा अभिवश्ति का विकास कर सके। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण गुणवत्ता से संबंधित प्रकरणों के लिए व्यवहारिक संहिता का निर्माण करने तथा निर्णय लेने की आदतों को भी व्यवस्थित करती है। अतः पर्यावरण शिक्षा वर्तमान परिपेक्ष्य में विश्व समुदाय जो अपने कृत्यों से तथा विकास की प्रतियोगिता में उत्तरोत्तर भागीदारी करने को उतावला होकर पृथ्वी के स्वर्गीय एवं स्वस्थ पर्यावरण को नरकीय पर्यावरण में परिवर्तित कर रहा है, इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है ताकि विशम समस्याओं का बोध किया जा सके।

पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः विश्व समुदाय को पर्यावरण संबंधी दी जाने वाली वह शिक्षा है जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उसका समाधान खोज सके और साथ ही साथ भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को रोका जा सके, अन्यथा वर्तमान विकास मानव के लिए सर्वदा बाधक एवं आपदा बनाकर उपस्थित हो जाएगा।

पर्यावरण शिक्षा की विशेशताएं :–

पर्यावरण शिक्षा हमारे तथा हमारे समाज के लोगों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है स इसके प्रति देश के प्रत्येक नागरिक को जागरूक होना आवश्यक है, इसकी प्रमुख विशेशताएं निम्नलिखित है।–

(१) पर्यावरण शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो मानव तथा उसके भौतिक एवं सांस्कृतिक तथा जैविक वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों से अवगत कराना है।

(२) इस प्रक्रिया के अन्तर्गत मनुष्य का पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान, कौशल, अवबोध, अभिवृत्ति, विश्वास तथा मूल्यों से अवगत कराया जाता है जिससे पर्यावरण सुधार होता है।

(३) वर्तमान में उत्पन्न होने वाले असंतुलन का आभास कराया जाता है तथा अपेक्षिक विकास तथा सुधार की योजना तैयार की जाती है।

(४) पर्यावरण की गुणवत्ता के लिए निर्णय किया जाता है तथा उसके लिए अभ्यास किया जाता है ताकि उत्पन्न समस्याओं का समाधान किया जा सके।

(५) पर्यावरण–शिक्षा द्वारा बालक स्वयं प्राकृतिक एवं जैविक वातावरण की समस्याओं को खोजने में समर्थ बनाया जाता है तथा उनका समाधान भी स्वयं ही करता है ताकि जीवन का समुचित विकास होता रहे।

(६) पर्यावरण–शिक्षा–समस्या–केन्द्रित मूल्यों, समुदाय का अभिविन्यास भविष्य की ओर उन्मुख मानव विकास तथा अन्तःअनुशासन आयाम से जुड़ी है।

(७) पर्यावरण–शिक्षा सश्जनात्मक कौशल तथा रचनात्मक व्यवहार की अभिवश्द्धि विकसित करता है।

(८) पर्यावरण शिक्षा स्वस्थ तथा सन्तुलित जीवन–यापन के लिए सक्षम बनाती है।

(९) इसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक पक्ष ही क्रियाशील नहीं रहता है अपितु व्यावहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष भी समाहित होता है।

(१०) शिक्षा के सभी आयामों, प्रतिमानों, विधियों, प्रविधियों, युक्तियों, सहायक सामग्री अपनाया जाता है, जिससे समस्याओं को चिह्नित कर उनका यथासम्भव समाधान किया जा सके और गुणवत्ता सुरक्षित रखी जा सके।

पर्यावरण चेतना में अध्यापक की भूमिका :—

पर्यावरण चेतना का सम्बन्ध संवेदनशीलता से जुड़ा हुआ है, जिसमें पर्यावरण के प्रति हमारी धारणा या दृष्टिकोण अर्थात् हम पर्यावरण को किस रूप में देखते हैं, पर्यावरण के प्रति कितने सचेष्ट हैं? इसकी जानकारी प्राप्त होती है। यह मानव के पर्यावरण के प्रति मानसिक अनुभूति का परिणाम है। अतः यह स्थायी न होकर परिवर्तित होती रहती है, जिसके लिए सही दिशा प्रदान करना आवश्यक होता है। पर्यावरण एवं पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति के जागृति एवं संवेदनशीलता के विकास से ही पर्यावरण—चेतना का विकास किया जा सकता है, जिसके लिए अध्यापक जो समाज के महत्वपूर्ण भाग विद्यालय से जुड़ा है, की बड़ी अहम भूमिका हो सकती है। अध्यापक की भूमिका अधोलिखित प्रकार से हो सकती है—

१. पर्यावरण की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करने में अध्यापक अपनी कक्षाओं द्वारा आयोजन की अवधि के तहत या पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के आयोजन की अवधि में पर्याप्त भूमिका निभा सकता है।

२. पर्यावरण चेतना में प्रदूशण एवं विकृतियों के स्वरूपों को विश्लेपित एवं मूल्यांकन करने में अध्यापक की सहायता महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

३. पर्यावरण चेतना सम्बन्धी फिल्मों, निबन्धों, लेखों एवं रिपोटों को सक्षमतापूर्वक जानने—समझने में भी वह छात्रों की मदद कर सकता है।

४. अपने पर्यावरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों को गहराई में अध्ययन करने की दृष्टि से छात्र को विशेष सहायता अपने सम्बन्धित विपयों के अध्यापकों से प्राप्त हो सकती है।

५. पर्यावरण चेतना में विशिष्ट स्थलों के दृष्टान्तों का साक्षात्कार कराने में अध्यापक को भूमिका देखी जा सकती है। ऐसे स्थलों पर वह प्रदूषण द्वारा पड़े प्रभावों का जायजा लेने में छात्रों को मदद कर सकता है तथा उसको संवेदनशीलता एवं सुग्राहिता बढ़ा सकता है।

६. पर्यावरण चेतना गाँवों एवं शहरों में अभिभावकों तथा सामान्य लोगों के बीच जाकर अध्यापक पर्यावरण चेतना जागृति कर सकता है। यह कार्य प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के अध्यापक अत्यन्त कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने में सफल हो सकते हैं।

अध्यापक—प्रशिक्षण के आदर्श कार्यक्रम:—

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) राज्य शिक्षा अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT) निदेशालय तथा उच्च विभाग भी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विकास करने का प्रयास कर रहे हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने भी पाठ्यक्रम तैयार किया है। इस प्रकार अध्यापक—शिक्षा के लिये विधि पाठ्यक्रम विकसित किये गये हैं। पर्यावरण—शिक्षा की चेतना के विकास के लिये सेवारत् अध्यापकों के विविध प्रकार के कार्यक्रमों की व्यवस्था की जा रही है। निम्नांकित कार्यक्रमों का प्रस्ताव सेवारत् अध्यापकों के लिये एक आदर्श (modular) रूप में किया गया है—

१. चार सप्ताह के सम्पर्क कार्यक्रमों की व्यवस्था होनी चाहिये, जिसमें सेवारत् अध्यापकों को पर्यावरण—शिक्षा तथा उसकी शिक्षण विधियों की जानकारी दी जाये तथा अभ्यास भी कराया जाये।

२. प्रशिक्षण—संस्थाओं के प्रअध्यापकों को पर्यावरण की पाठ्य—वस्तु के लिये अभिक्रमित अनुदेशन सामग्री (Programmed Instructional Material) तैयार कराई जाये और अध्यापकों को स्वयं सीखने के लिये दी जानी चाहिये।

३. दूरवर्ती—शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सेवारत अध्यापकों को पर्यावरण—शिक्षा के सम्बन्ध में चेतना तथा समझ का विकास करना चाहिए। इसके अन्तर्गत मुद्रित तथा अमुद्रित दोनों माध्यमों का उपयोग किया जाये। पत्राचार—पाठ्यक्रम का भी पर्यावरण—शिक्षा के लिये सेवारत अध्यापकों के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

४. जन संचार माध्यमों (Mass Media) का उपयोग भी सेवारत् अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिये किया जाना चाहिए। निरौपचारिक शिक्षा (Nonformal

Education) में भी पर्यावरण की समस्याओं तथा उनके दुष्प्रभावों के सम्बन्ध में चेतना तथा समक्ष का विकास किया जा सकता है। समाचार–पत्रों, रेडियो, दूरदर्शन, पत्र–पत्रिकाओं, जन–संचार माध्यमों का उपयोग पर्यावरण जागरुकता के लिये किया जा सकता है।

५. सेवारत अध्यापकों के लिये गोष्ठियों, सम्मेलन, सामूहिक वाद–विवाद कार्यशालाओं का आयोजन पर्यावरण शिक्षा प्रकरण पर किये जा सकते हैं।

६. सेवारत् अध्यापकों को कुछ प्रयोगात्मक कार्य तथा क्रियात्मक अनुसन्धान द्वारा स्थानीय समस्याओं के अध्ययन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इनमें छात्रों का सहयोग भी लिया जाना चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा के प्रसार में शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व :–

पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार के अभियान को व्यापक तौर पर चलाने के लिए पूरे समाज की जिम्मेदारी है परन्तु शिक्षक समाज का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व युक्त सदस्य है। इसलिए इस लक्ष्य की प्राप्त के लिए उसकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि वह समाज की समस्याओं का विद्यालय जैसी प्रयोगशाला में अशोधन करने वाला एक संवेदनशील एवं जिम्मेदार नागरिक होता है। जो अपने छात्रों में अपने वातावरण या पर्यावरण, भौतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक के प्रति चेतना विकसित करने के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन कर सकता है।

१. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा पर्यावरण चेतना विकसित करने हेतु पर्याप्त भूमिका निभा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत छात्रों द्वारा निम्नांकित क्रिया करवाई जा सकती है जिससे पर्यावरण में सुधार हो सकेगा। शिक्षक स्वयं अपनी उपस्थिति में उन्हें उत्प्रेरित कर भौतिक पर्यावरण की वर्तमान स्थिति को सुधारने में मदद कर सकता है, क्योंकि शिक्षक विद्यालय में विभिन्न विषयों का ज्ञान विद्यार्थियों को देता है। इसलिए उस विषय के साथ विभिन्न तरह के पर्यावरण की जानकारी सहज ढंग से दे सकता है।

अ. वृक्षारोपण, हरी–भरी वाटिकाओं का संरक्षण करना तथा कराना।

ब. पार्कों एवं जलाशयों की सफाई करवाना तथा स्वच्छता के प्रति जनसाधारण को जागरूक बनानेहेतु स्थान–स्थान पर छात्रों द्वारा एवं सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई सुन्दर वाटिकाओं को लगवाना।

स. अपशिष्ट पदार्थों, कूड़ों इत्यादि को उपयुक्त स्थान पर रखने की आदत विकसित करना। प्रायः शिक्षित समाज में आज भी यह कमियाँ दिखाई देती है।

द. छात्रों के पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूक बनाने की शिक्षा देना साथ ही क्रियात्मक रूप में गंदी बस्तियों एवं गाँवों में उन्हें ले जाकर ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत करवाना जिससे जनसामान्य पर्यावरण सुधार के प्रति सजग हो सके और इसे सुधारने के लिए सभी वर्ग के लोगों का सहयोग ले सकें।

२. पर्यावरण के तीनों स्वरूपों–भौतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक में उत्पन्न प्रदूषण विकृतियों के स्वरूपों विश्लेशित एवं मूल्यांकित करने में भी शिक्षक की सहायता महत्त्वपूर्ण हो सकती है।

३. पर्यावरण सम्बन्धी फिल्मों, निबंधों, लेखों एवं रिपोर्टों को सशजित करने तथा पूर्वनिर्मित सामग्रियों में अपेक्षित सुधार लाकर उन्हें सूक्ष्म रूप में समझने में छात्रों की सहायता कर सकता है।

४. पर्यावरण चेतना विकसित करने में विशेष भूमिका : पर्यावरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों के गहराई में अध्ययन करने की दृष्टि से छात्रों के प्रति एवं विशेष रूप से समाज के एक विशेष प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक विशेष भूमिका निभा सकता है। भौतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विशयों से सम्बन्धित शिक्षक छात्रों को इन क्षेत्रों से सम्बन्धित नवीन जानकारियों से अवगत कराकर पर्यावरण सुधार के प्रति क्रान्ति ला सकता है–

(अ) शिक्षक वैज्ञानिक की भाँति समस्याओं को पहचान कराकर उनके सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को अपने छात्रों के समक्ष विश्लेषित कर सकता है तथा प्रत्येक तथ्य की तर्कपूर्ण व्याख्या कर सकता है जिससे छात्रों का मन–मस्तिश्क प्रत्यक्ष एवं सक्रिय रूप में प्रभावित हो सकेगा।

(ब) चूँकि शिक्षक समाज का प्रतिनिधि सदस्य है। शिक्षक का महत्त्वपूर्ण दायित्व उसके कन्धों पर है उसका प्रत्यक्ष सम्पर्क सामाजिक क्षेत्र से होता है। अतः

सामाजिक पर्यावरण में उत्पन्न भयावह स्थिति, विकृति को कम करने में वह विशेष भूमिका निभा सकता है, क्योंकि वह समाज का एक जिम्मेदार एवं संवेदनशील व्यक्ति विशेष होता है।

(स) शिक्षक मनोवैज्ञानिक की भाँति छात्रों की संवेदना, कुण्ठा के प्रति जागरूक होकर एक मित्र की भाँति उनकी विक्षिप्ताओं को समझकर उपयुक्त संसाधन ढूँढ़कर सामान्य स्थिति में ला सकता है तथा उनमें प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण का विकास कर सकता है जिससे वे अपनी कुण्ठाओं को समाज पर आरोपित न करें वरन् विद्यालय में उसका अशोधन किया जाए एवं एक स्वस्थ मानसिक स्थिति वाला जिम्मेदार नागरिक का सश्जन कर सके।

५. पर्यटन द्वारा शिक्षा (Educational Excursion): छात्रों को भ्रमण एवं पर्यटन के माध्यम से विशिष्ट स्थलों एवं आत्म—विकृतियों तथा प्रदूषणों को दृष्टान्त प्रस्तुत कराकर शिक्षक विशेष भूमिका निभा सकता है। ऐसे स्थलों पर वह प्रदूषण द्वारा पड़े प्रभावों का निरीक्षण करने में अपने अनुभवों द्वारा छात्रों की सहायता कर सकता है।

उपसंहार :—

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम तथा उसकी गुणवत्ता में ''राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद" की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। अनेक विश्वविद्यालयों ने पत्राचार—पाठ्यक्रम द्वारा बी.एड. की उपाधि को देना तथा धन कमाने का साधन मान लिया था, जिससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता का विघटन हुआ था। अध्यापक—शिक्षा परिषद् ने इन सब पर रोक लगाई है और सेवारत् अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम दिया है। इस प्रकार परिषद् ने अध्यापक शिक्षा को प्रभावशाली बनाने हेतु प्रयासरत् हैं। अध्यापक—शिक्षा के पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक रूप में पर्यावरण—शिक्षा की पाठ्यवस्तु को अनिवार्य रूप में सम्मिलित किया जाए तथा स्थानीय पर्यावरण की समस्याओं के लिए प्रयोगात्मक कार्य को सम्मिलित किया जाए। शिक्षण—विषयों के साथ पर्यावरण के विशिष्ट पाठ्यवस्तु—भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, जैविक तथा मनोवैज्ञानिक पर्यावरण की पाठ्यवस्तु को सम्मिलित किया जाए, जिससे अध्यापकों में पर्यावरण चेतना तथा समय का विकास हो और वे छात्रों में यह चेतना तथा समय विकसित कर सकें।

संदर्भ सूची :—

१— शर्मा डॉव आरव एव, अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीक, आर लाल बुक डिपो मेरठ

२— सिंह हरेंद्र, सक्सेना एन.आर. मिश्रा बी. के. ,मोहंती आर.के, अनुसंधान एवं अध्यापक शिक्षा के मुद्दे, आर लाल बुक डिपो मेरठ

३— बर्मा डॉ० एल. एन, खत्री डॉ०एल. सी, कायमखानी डॉ० इसाक मोहम्मद, पर्यावरण अध्ययन, हिंदी ग्रंथ अकादमी राजस्थान

४— पांण्डेय डॉ० केपी, भारद्वाज डॉ० अमिता, पाण्डेय डॉ० आशा, पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय संदर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

५— कुमार डॉ० रंजन, पर्यावरणीय नैतिक संचेतना एवं वैज्ञानिक अनुशीलन, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ

६— पांण्डेय प्रो० रमेश कुमार, अध्यापक शिक्षा में मूल्यमीमांसा वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियाँ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ वाराणसी

७— त्रिपाठी डॉ निरंकार राम, अध्यापक शिक्षा केएसके पब्लिकेशन दरियागंज नई दिल्ली

❑❑❑